>

Tittle : Need to release sufficient quantity of water from the tributaries of River Ganga in Bihar.

श्री जगदानंद सिंह (बक्सर): गंगा नदी एक अंतर्राज्जीय एवं अंतर्राÂट्रीय नदी है एवं गंगा बेसिन की जमीन राÂष्ट्र की सबसे उपजाऊ जमीन है। इस बेसिन में 40 करोड़ से अधिक आबादी निवास करती है तथा हर दृÂिष्टकोण से गंगा के पानी पर आधारित है। मुख्यतः इलाका कृषि प्रधान है तथा कृषि ही इस आबादी के जीविकोपार्जन का साधन है। पूरे इलाके के पर्यावरण का संतुलन भी गंगा आधारित है।

गंगा के पानी का अनियंत्रित उपयोग एवं दोहन करोड़ों की आबादी के लिए समस्या बनती जा रही है। गंगोत्री के उद्गम स्थान से निकली गंगा को मैदानी इलाके में आने के पूर्व ही (भागिरथी तथा भिलंगना का पानी) टिहरी बांध में रोक लिया गया है। हरिद्वार-नरौरा तथा अन्य स्थानों में बराज बनाकर करीब-करीब गंगा में उपलब्ध पानी के प्रवाह को सिंचाई के लिए स्थानांतरित कर लिया गया है। गंगा बेसिन की अन्य नदियों का भी दोहन अनियंत्रित ढ़ंग से हो रहा है।

गंगा के निचले भाग का पानी फरक्का के लिए सुरक्षित कर दिया गया है। अर्थात गंगा के उपरी भाग का पानी जलाशय में रोकने, बीच के नदियों के सूख जाने तथा निचले भाग के पानी का फरक्का के लिए सुरक्षित होने के कारण तटवर्ती राज्यों में विशेÂषकर बिहार की 10 करोड़ सं अधिक आबादी के समक्ष संकट खड़ा हो गया है।

गंगा बिहार की सीमा में बक्सर में प्रवेश करती है जहां गंगा प्रायः सूखने के कगार पर है। बक्सर से लेकर झारखंड-बंगाल की सीमा से ऊपर प्रवाहित पानी में भी काफी गिरावट के चलते राÂट्रीय जल राजमार्ग में जलयानों का आवागमन बाधित हो रहा है तथा बिहार के विकास की योजनाओं के लिए पानी के प्रयोग में केंद्रीय सरकार से अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पा रहा है जबकि भारत सरकार ने बांग्लादेश के साथ फरक्का समझौते के वक्त किसी भी तरह के रूकावट नहीं पैदा करने की बिहार की शर्त को स्वीकार किया था।

अतः मैं भारत सरकार से मांग करता हूं कि गंगा के पानी के आवश्यक उपयोग की अनुमति प्रदान करें तथा ऊपरी तटवर्ती राज्यों की नदियों से गंगा में पानी प्रवाहित करने के लिए निर्देशित करें।